कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

हर हाथ तिरंगा होगा ।
हर चेहरे पर मुस्कान ।।
हम छोटे-बड़े सभी मिल ।
करते भारत जयगान ।।
अमृत महोत्सवी गुणगान ।
न भूले अखंड हिंदुस्थान ।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 33, अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2022 (विक्रम संवत् 2079)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद
-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी
–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- हे मातृभूमि तेरी जय हो... 2
- कार्य का आधार कार्यकर्ता... 3
- वनयात्रा 5
- बेलपुकुर ग्राम भ्रमण 8
- युवा समिति द्वारा आज़ादी के... 9
- आगामी कार्यक्रम 9
- सिंधारा उत्सव 10
- रक्षाबंधन महोत्सव 11
- लेकटाउन समिति द्वारा त्रिदिवसीय... 12
- अनुकरणीय 12
- वार्षिकोत्सव 13
- जनजातीय समाज का... 14
- युगवक्ता वरिष्ठ कवि... 15
- अभिनन्दन 15
- बोधकथा... धरती का रस 16
- कविता ... भारत को उठाया है 16

हे मातृभूमि तेरी जय हो, सदा विजय हो!

15 अगस्त 1947 को लंबे संघर्ष के बाद देश आजाद हुआ और तब प्रत्येक भारतवासी के मन में देश की माटी के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति के साथ एक ही संकल्प था **पुरानी नींव, नया उत्थान, करें हम भारत का नव निर्माण**। दसों दिशाओं से नव निर्माण की जो हवा चली उसने देश को एक नई प्राण ऊर्जा से भर दिया। शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, व्यापार, विज्ञान, तकनीक, खेल संचार, कला, संस्कृति, साहित्य, संगीत आदि सभी क्षेत्रों में अपने सामर्थ्य को हमने प्रमाणित किया है। हमारी दक्षता और योग्यता ने सारी दुनिया में हमारे स्वाभिमान को प्रतिष्ठित किया है। कोरोना काल की सजगता और आत्मानुशासन के साथ हमारी आस्था ने विश्व को चमत्कृत किया है। भारतीय जीवन मूल्य तथा आध्यात्मिक ऊर्जा ने सारे विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है। पिछले कुछ सालों में भारत डिजिटल भारत हो गया है। अब तो छोटे-छोटे शहरों और ज्यादातर गाँव में भी लोग यूपीआई से ही लेनदेन करते हैं। डिजिटल क्रांति सही अर्थों में एक सम्यक् क्रांति है। एक और क्षेत्र जहां भारत कामयाबी के आसमान पर है वह है आईटी या सूचना प्रौद्योगिकी का। समकालीन विश्व अर्थव्यवस्था में भारत आईटी का सबसे बड़ा निर्यातक है। भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम दुनिया में सबसे कामयाब और कम लागत वाला है। असाधारण सफलता दर के साथ इसरो दुनिया की छठी सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसी है। चिकित्सा क्षेत्र में भी भारत नित नए कीर्तिमान बना रहा है। विश्व की 20% जेनेरिक दवाइयां भारत मुहैया कराता है। दुनिया में इस्तेमाल होने वाली 60% वैक्सीन मेड इन इंडिया है। अमेरिका ऑस्ट्रेलिया सहित 150 से अधिक देशों को हम दवा निर्यात करते हैं। हेपेटाइटिस बी और कैंसर की किफायती दवा हम बनाते हैं। भारत को "फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड" या दुनिया का औषधालय यूँ ही नहीं कहा जाता। खेल जगत में भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा तो बन ही रहा है; भारतीय खेलों को नई पहचान भी मिल रही है। हमारे खिलाड़ी एक के बाद एक सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। भारत की श्रेष्ठता का एक प्रमाण है अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 21 जून को योग दिवस की स्वीकृति। भारत ने विश्व को योग और योग दिवस दोनों दिया। भारत ने विश्व को शाकाहार जैसी पवित्र जीवन शैली और आयुर्वेद जैसी संजीवनी दी। स्टार्टअप इको सिस्टम में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा देश है और यूनिकॉर्न कंपनियों की संख्या 100 से भी अधिक पहुँच गई है। हमारा ध्येय किसी को जीतना नहीं जोड़ना है। जीतना नहीं है किसी को पर किसी के द्वारा जीते जाना भी नहीं है। डराना नहीं है किसी को लेकिन किसी से डरना भी नहीं। हम अपने उत्तरदायित्व एवं स्वाभिमान दोनों की रक्षा तेजस्विता के साथ कर रहे हैं और हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं और यह आत्मनिर्भरता भारत के पुन: विश्व गुरु बनने का मार्ग प्रशस्त करेगी। अपनी उपलब्धियों पर गर्व और गौरव बोध के साथ-साथ यह वक्त है संकल्पित होने का और अपने भारतीय होने के बोध को पुन: परिपुष्ट और सशक्त करने का। हमारा समर्पण और कर्म निष्ठा निश्चय ही भारत को विश्व पटल पर एक देदीप्यमान सूर्य की भांति आलोकित करेगी। इति शुभम्

- स्नेहलता बैद

कार्य का आधार कार्यकर्ता : रामदत्त चक्रधर

- डॉ रंजना त्रिपाठी, अलीपुर महिला समिति

(पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता महानगर की योजना बैठक 31 जुलाई 2022, सुबह 11 बजे कल्याण भवन, कोलकाता में संपन्न हुई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सह सरकार्यवाह श्री रामदत्त चक्रधर जी योजना बैठक में उपस्थित थे तथा आपका मार्गदर्शन हमें प्राप्त हुआ। प्रस्तुत है उनके संबोधन के कुछ महत्त्वपूर्ण एवं संग्रहणीय अंश - संपादक)

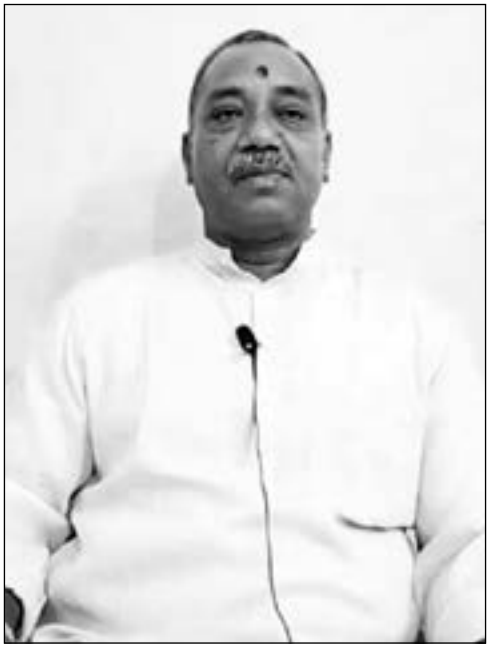

कार्य का आधार कार्यकर्ता है - इस वाक्य से अपने तेजस्वी संबोधन का प्रारंभ करते हुए श्री रामदत्त जी ने कहा कि अखंड भारत बनाना है तो जड़ों को मज़बूत करना होगा। जड़ें मजबूत हों तो तने को मिटाया नहीं जा सकता। कार्यकर्ताओं को चार्ज करने के लिए नियमित बैठक होनी चाहिए। तभी दायित्व का निर्वहन हो सकेगा। सभी कार्यकर्ताओं को सप्ताह में कम से कम तीन नये लोगों से मिलना होगा। ऐसा संकल्प कार्यकर्ताओं को लेना चाहिए। ट्यूब लगा है, करेंट नहीं है तो जलेगा नहीं, ऐसा विचार कर आज के इस समय में युवा आयाम को गति देनी होगी। संगठन में नई पीढ़ी का प्रवेश आवश्यक है, विश्राम का समय नहीं है, सतत् चलना होगा। कार्यकर्ता का सबसे बड़ा गुण है - संवेदना और वेदना। पीड़ा को दूर करना ही संवेदना है। इस संदर्भ में रामदत्त जी ने विवेकानंद से जुड़े एक प्रसंग को उद्धृत किया।

विवेकानंद जी की संवेदनशीलता का उदाहरण देते हुए चक्रधर जी ने कहा कि एक बार गिरीश जी ने विवेकानंद जी से कहा कि नरेंद्र एक बालक बहुत भूखा है। क्षुधा को शांत करने का कोई उपाय है। नरेंद्र उत्तर न दे सका और रोने लगे। गिरीश जी ने कहा कि नरेंद्र का सम्मान इसलिए है क्योंकि वे संवेदनशील हैं।

संवेदनशीलता का दूसरा उदाहरण देते हुए बताया कि संजीव नाम का एक व्यक्ति अपने किसी प्रिय व्यक्ति के श्राद्ध में अपने गाँव आया था। वहाँ पर भोज भी था। उसने देखा कि श्राद्ध – भोज के उपरांत खगड़िया जिले में डोम जाति के लोग झूठे पत्तलों से खाने लगे। यह दृश्य देखकर संजीव विचलित हो उठा। अगले पल ही उसने देखा कि

डोम जाति के बच्चे कुत्तों से भोजन के लिए लड़ रहे थे। हृदय विदारक इस दृश्य ने उसे अंदर तक झकझोर दिया। उसने अपनी नौकरी छोड़ दी। गाँव आकर पढ़ाने लगा। विवाह का प्रसंग आने पर उसने कहा कि विवाह इसी शर्त पर होगा कि पत्नी को यहीं साथ रहना होगा। दोनों साथ रहकर समाज के उत्थान के लिए सतत लगे रहते थे। लेकिन एक दिन वह समय आया जब पत्नी ने कहा कि बच्चे बड़े हो गए हैं। उनकी उच्च शिक्षा के लिए अब दिल्ली चलना होगा। संजीव ने कहा कि एक बच्चे के लिए 100 बच्चों को छोड़ नहीं सकते। पत्नी को आदेश दिया कि वह चाहे तो जा सकती है। कार्यकर्ताओं का मार्ग दर्शन करते हुए उन्होंने दूसरा ध्येय वाक्य बताया कि कार्यकर्ता में श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए। इस तथ्य को पुष्ट करने के लिये चक्रधर जी ने भक्तराज प्रह्लाद का उदाहरण दिया।

अपने संबोधन में आगे कहा कि कार्यकर्ता में प्रामाणिकता का गुण होना आवश्यक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी प्रामाणिकता और पारदर्शिता के कारण ही समाज में अविचल खड़ा है। इस हेतु एक उदाहण और प्रस्तुत किया। लातूर में विवेकानन्द अस्पताल है। एक बच्चे के होठ का ऑपरेशन हुआ।ऑपरेशन के पश्चात् भी उस बच्चे के परिजन अस्पताल में ही रहे। वे लोग अपने घर नहीं लौटे। डॉक्टर ने कहा कि आप लोग जाइए। तो उन लोगों ने कहा कि हमारे पास पैसे नहीं है। डॉक्टर ने 500 रूपये दिए। लेकिन उन लोगों ने किराये के मात्र 80 रूपए ही स्वीकार किये। डॉक्टर को 420 रूपये वापस कर दिये। इसी कड़ी में एक और दृष्टांत दिया। आपने कहा कि एक खंड कार्यवाह के पास गुरुदक्षिणा के पैसे थे। उनकी पत्नी के इलाज के लिए धनराशि की आवश्यकता थी और खंडकार्यवाह जी के पास इतने रुपए नहीं थे कि वे अपनी पत्नी का एक जरूरी टेस्ट करा सकें, जिससे रोग का पता चले और इलाज प्रारंभ हो सके। बाद में कुछ धन एकत्रित करके एक माह बाद वह वापस इलाज के लिए गया किन्तु गुरुदक्षिणा की धनराशि नहीं छुई। जब अधिकारियों ने कहा कि आपने इलाज में इतनी देरी क्यों की? गुरुदक्षिणा की राशि से ले लेते। बाद में वापस कर देते। तो खंडकार्यवाह जी ने कहा कि गुरुदक्षिणा की राशि को अपने कार्य के लिए छूना उचित नहीं समझा। ऐसे त्यागी-तपस्वी कार्यकर्ताओं से अपना संगठन बना है। रामदत्त जी ने कहा कि पहले उनमें भी त्याग, तपस्या, बलिदान और समर्पण के उदात्त भाव नहीं थे। लेकिन कार्य से जुडकर जीवन में सहज ही परिवर्तन घटित होता है।

अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि वाणी पर संयम की आवश्यकता है। सत्य भी अप्रिय न हो ऐसा ध्यान रखना चाहिए।

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्य आप्रियम्।

एक कहानी के माध्यम से अपने कथन को पुष्ट करते हुए कहा कि एक राजा थे। राज्य के ज्योतिषी लड़के कुण्डली देखकर राजा को बताते कि लड़के की अल्पायु में मृत्यु हो जाएगी। तो इस बात को सुनकर राजा क्रोधित हो उठते और ज्योतिषियों को दंड देने का विधान कर देते थे। इस बात को राजा ने एक और ज्योतिषी से पूछा। उस ज्योतिषी ने अपनी वाणी पर संयम बरतते हुए कहा कि आपके रहते रहते आपका पौत्र सिंहासन पर बैठेगा। बात एक ही है लेकिन कहने का ढंग अलग है।

अपने संबोधन को पूर्णता की ओर ले जाते हुए रामदत्त जी ने कहा कि कल्याण आश्रम का कार्य निश्चयत: ईश्वरीय कार्य है। अत: निश्चित रूप से हम सफल होंगे। *(श्रुत प्रतिलेखन)* ■

वनयात्रा

खड़ीबाड़ी और शालबाड़ी छात्रावास भ्रमण

- निधि तुलस्यान

मैं पिछले कुछ वर्षों से पूर्वांचल कल्याण आश्रम से जुडी हुई हूँ। पहली बार छात्रावास भ्रमण का अवसर प्राप्त हुआ और लेक टाउन महिला समिति व अवनि महिला समिति की 13 महिलाएँ और एक पुरुष सिलीगुड़ी के खड़ीबाड़ी और शालबाड़ी छात्रावास भ्रमण के लिए कोलकाता से निकले। बड़ा ही अद्भुत अनुभव रहा।

हम रेलयात्रा ही बड़े दिनों के बाद कर रहे थे। सभी महिलाएँ अत्यंत उत्साहित थी। हममें से कई महिलाएं उम्रदराज थी पर उत्साह में सबसे आगे। एक सामान्य ढंग से यात्रा का प्रबंध हुआ पर इसमें किसी को भी कोई परेशानी नहीं लगी। हर चुनौती को सब ने बड़े ही उत्साहपूर्वक स्वीकार किया। यह मेरे लिए सबसे बड़ा सबक रहा।

वहाँ पहुंचते ही देखा कि वहाँ के पूर्णकालीन कार्यकर्ता आशीष दा अपने छात्रावास के लड़कों और गाड़ियों के साथ हमें लेने के लिए पहुँचे हुए थे। हम बड़े उत्साह के साथ शालबाड़ी छात्रावास

पहुँचे। कितना सुंदर छात्रावास बना हुआ है। खाने-पीने-सोने सभी की बड़ी सुन्दर व्यवस्था थी। बच्चे सामान ऊपर पहुँचाने में, खाना पीना परोसने में हर तरह से मदद कर रहे थे। आशीष दा ने बड़ी सुंदर बात कही-"हम आपके घर आयेंगे तो आप अपने बच्चों को काम पर नहीं लगाएंगे क्या? वैसे ही ये छात्र भी किसी से कम नहीं।"

हम महिलाएँ एक साथ ग्रुप में आशीष दा के लिए एक चैलेंज ही थे। पहुंचते ही हमारा मन इधर उधर घूमने को दौड़ने लगा। मगर आशीष दा ने हमको कहीं भटकने नहीं दिया। हमारा जो उद्देश्य था उसी दायरे में हमको बाँध कर रखा। उनको तो सारे प्रकल्प से अवगत कराना था। वे अपने प्रोग्राम में डटे रहे। शालबाड़ी में तीरंदाजी देख हम अति प्रभावित हुए। वहाँ कई महिलाओं ने तो अपने-अपने हाथ भी आजमाए।

दोपहर के भोजन के बाद हम शालबाड़ी से निकले। हमें खडीबाड़ी जाना था मगर रास्ते में हम सिलीगुड़ी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं से मिले। उनके साथ बैठक हुई। जान-पहचान के साथ विचारों का आदान प्रदान हुआ और हमने आगे खड़ीबाड़ी की ओर प्रस्थान किया। खड़ीबाड़ी पहुंचकर रात का खाना पीना कर वहीं हमारे सोने की व्यवस्था भी थी। दूसरे दिन स्वतंत्रता दिवस था। हम सबने पहले से ही एक जैसे कपड़े पहनने की योजना बनाई थी।

अपनी आँखों से वहां के बच्चों, औरतों और समाज की प्रगति देख कर हमारे ध्येय वाक्य-"तू मैं एक रक्त" की जो भावना है, वह सार्थक होती दिखी।

आजादी का अमृत महोत्सव हमे खड़ीबाड़ी में कल्याण आश्रम द्वारा संचालित प्राइमरी स्कूल में मनाना था। निर्धारित समय पर हम स्कूल में पहुँच गए। वहाँ झंडोत्तोलन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम की पूरी तैयारी थी। सेलिब्रेशन के दौरान वहाँ के बच्चों को किसी भी तरह से कम नहीं पाया। नृत्य-गान एवं वक्तव्य में बच्चों ने बेहिचक अपना प्रदर्शन किया जो अत्यंत मनमोहक था और उनके पूर्ण विकास को भी दर्शा रहा था।

जहाँ नित्य भजन मंडली पूरे परिवार के साथ कृष्ण और राम का भजन करती है, वहाँ संस्कार की कमी कैसे हो सकती है। खड़ीबाड़ी में कीर्तन के लिए हम ऐसे ही एक परिवार में गए, बहुत भाव से उन्होंने हमारा स्वागत किया और अपने भजन, व्यवहार और प्यार से हम सबका मन मोह लिया। सिलिगुड़ी के कार्यकर्ताओं से मिलना प्रेरणा और आनंद का स्रोत साबित हुआ। आशीष दा के बनाए प्रोग्राम के अनुसार हमने वहाँ के कई प्रकल्पों को देखा और जाना। विषम परिस्थिति में भी कार्यकर्ता कैसे जुटे हुए हैं; यह देख कर हम सभी प्रभावित हुए।

अपनी संस्था पर हमें अभिमान भी हुआ और जो कार्य हम शहरों में कर रहे हैं उसकी उपयोगिता का अहसास हुआ। छात्रावास भ्रमण नए कार्यकर्ताओं के लिए बहुत ही उपयोगी साबित हुआ। नये कार्यकर्ता कल्याण आश्रम के कार्यों से अत्यंत प्रभावित दिखे और समाज में इसके लिए जागरूकता फैलाने के लिए भी आतुर दिखे।

बेलपहाड़ी छात्रावास भ्रमण

- विवेक चिरानिया, सह संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर

पूर्वांचल कल्याण आश्रम लेक टाउन पुरुष समिति से कुल 15 लोग 13-15 अगस्त की वनयात्रा के लिए बेलपहाड़ी छात्रावास गए जिसमे 12 पुरुष और 3 महिलाएं थी। इनमे 10 लोग ऐसे थे जो पहली बार वनयात्रा पर गए। सभी काफी उत्साहित थे। तीन घंटे की रेलयात्रा कब ख़त्म हुई और हम झाड़ग्राम पहुँच गए, पता ही नहीं चला। झाड़ग्राम से हम सभी कार से बेलपहाड़ी के लिए रवाना हुए। बेलपहाड़ी छात्रावास में हमारा स्वागत डॉ. अशोक जाना एवं छात्रावास के बच्चों ने बड़े उत्साह से किया।

वहां दोपहर का भोजन करने और थोड़ा विश्राम करने के पश्चात हमारी बैठक वहां की जिला समिति के सदस्यों के साथ हुई जिनसे हमें वहां की परिस्थितियों और समस्याओं के विषय में जानने का अवसर मिला। इसके बाद हमलोगों ने छात्रावास के बच्चों के साथ सायं शाखा में भाग लिया। उनका अनुशासन और दक्षता देखकर हम सभी अचंभित थे। नगर की शाखा से अलग एक अनोखा अनुभव था। शाखा के पश्चात संध्या आरती हुई और फिर हम बच्चों के साथ वार्तालाप करने के लिए बैठे। बच्चों से उनकी रुचि और भविष्य की उनकी योजनाओं के विषय में कुछ जानने की चेष्टा की। उनमे कुछ बच्चे विशेष रूप से प्रतिभावान लगे और हमने अनुभव किया कि उन्हें यदि सही दिशा और सहयोग मिले तो वे भविष्य में कुछ विशेष करने की क्षमता रखते हैं।

अगले दिन सुबह हमारी नींद बच्चों के मंत्रोच्चार से खुली। रोज सुबह अजान की आवाज़ सुनने वाले

कानों को एक अरसे के बाद ऐसा सुखद अनुभव प्राप्त हुआ। हमने थोड़ा योगासन और प्राणायाम किया और फिर नहा कर भोजन किया और तैयार हो गए एक और अनोखी यात्रा के लिए। आज हमने तीन-तीन लोगों की पांच टोलियाँ बना रखी थी, पाँच वनवासी ग्रामों की यात्रा के लिए। टोलियों के नाम हमने कुछ यूँ रखे थे - "भगत सिंह", "महाराणा प्रताप", "एकलव्य", "रानी लक्ष्मी बाई" और "चंद्रशेखर आज़ाद"।

घनघोर वृष्टि के बीच हम सभी नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए। ग्रामों में शिशु शिक्षा केन्द्रों के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने हमें बड़े स्नेह के साथ दोपहर का भोजन करवाया। इस वर्ष इंद्रदेव के कोप के मध्य यह दिन कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वर्षा की अब तक की कमी को उन्हें आज ही पूरा करना था। इतनी ज्यादा वृष्टि होने के कारण ग्रामों के सारे पुरुष और अधिकांश महिलायें रोपण के लिए अपने अपने खेतों में चले गए थे। ऐसा लग रहा था कि ग्रामवासियों से हमारा मिलना नहीं हो पायेगा। परन्तु जब हम शिशु शिक्षा केन्द्रो पर पहुँचे तो वहां उपस्थित महिलाओं और बच्चों की संख्या देखकर हमें आश्चर्य हुआ। उनकी ख़ुशी और उनका उत्साह देखकर हम भावविभोर हो गए। हमने बच्चों से और उनकी माताओं से वार्तालाप किया। शिशु शिक्षा केंद्र के प्रति उनकी अभिव्यक्ति बहुत सकारात्मक थी और उन्होंने कहा कि बच्चे वहाँ खेल खेल में बहुत कुछ सीख-पढ़ लेते हैं। यह भी बताया कि बच्चे सुबह उठते ही शिक्षा केंद्र जाने के लिए लालायित रहते हैं। यह जानकारी काफी उत्साहजनक थी और उन केंद्रों पर पढ़ाने वाले शिक्षक/शिक्षिकाओं का समर्पण भाव भी अद्भुत था। बच्चों ने हमें कई मन्त्र और श्लोक सुनाये। सामूहिक नृत्य भी किया। जो गुण अपने बच्चों को देने के लिए हम नगरवासी इतनी असफल मेहनत करते हैं, वहाँ के बच्चे उन्हें सहज ही प्राप्त कर रहे हैं। ग्रामवासियों ने हमारे स्वागत के लिए वनवासी नृत्य का भी आयोजन किया था। पुरुषों ने वाद्ययंत्र संभाले और महिलाओं ने पारम्परिक परिधान में नृत्य किया। हममें से अधिकांश के लिए जीवनपर्यन्त न भूलने वाला यह एक अनोखा अनुभव था।

अगला दिन स्वतंत्रता दिवस था और हम भारतवासी आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे थे। छात्रावास के बच्चों ने बड़ी मेहनत और उत्साह के साथ महोत्सव की तैयारियां कर रखी थी। जिन ग्रामों में हम एक दिन पहले भ्रमण करके आये थे, उनमें से कुछ ग्रामों के बच्चे, महिलाएं और शिक्षिकाएं भी महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए वहां आये थे। हम सब ने पहले देशभक्ति के गीतों के साथ बच्चों और महिलाओं के संग हाथों में राष्ट्रध्वज लेकर परेड की और गीतों का भरपूर आनंद लिया। उसके बाद ध्वजारोहण में सभी सम्मिलित हुए। ध्वजारोहण के पश्चात् वनवासी नृत्य और फिर देशभक्ति के गीतों पर बालिकाओं ने सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किये। बौद्धिक और वनवासी गीतों की श्रृंखला के पश्चात भोजन का कार्यक्रम था। हम लोगों ने सभी वनवासी ग्रामवासी आगंतुकों को भोजन करवाया और फिर स्वयं भी भोजन करने के बाद वापसी की तैयारी में लग गए। आज ही हमें वापस आना था लेकिन मन कह रहा था कि एक दिन तो और रुक जाते। वहाँ के परिवेश, वहाँ के बच्चों से एक आत्मीयता का रिश्ता हो चला था और हम 15 लोग भी आपस में एक परिवार की भाँति हो गए थे।

एक अत्यंत सुखद अनुभव, वनवासियों के लिए कुछ करने की इच्छा और जल्दी ही एक और वनयात्रा करने की आशा लिए हम वापस अपने घरों को लौट गए। इस वनयात्रा ने कल्याण आश्रम के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और प्रगाढ़ किया है और हम सभी समर्पण भाव के साथ वनवासियों के लिए कुछ कर सकें, इस भावना को भी बल मिला है।

गोसाबा छात्रावास भ्रमण

- सुनील कुमार बरेलिया

कुछ दिन पहले पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा संचालित गोसाबा कन्या छात्रावास में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सभ्यता से बहुत दूर, समुद्रों से घिरा हुआ, जीवन-यापन के लिए जरूरत के सामान से वंचित और बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है वहाँ के लोगों को!

ऐसी जगह पर पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा निर्मित कन्या छात्रावास बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है!

सभी का फूलों से स्वागत कभी न भूलने वाला लम्हा था। हमनें दो दिन छात्रों के साथ बिताए। दो दिन तक कोई चीज की कमी महसूस नहीं हुई। बच्चों का सादा जीवन दिल को लुभाने वाला था। सुबह की प्रार्थना, योगाभ्यास, शिक्षा, इत्यादि सब कुछ सलीके से था। एक दो दिन और बिताने का मन था पर ये हो न सका फिर कभी... ■

बेलपुकुर ग्राम भ्रमण

-ऋचा-सुभाष जैन, संयोजक, काकुड़गाछी पुरुष समिति

साउथ 24 परगना के बेलपुकुर ग्राम की वन यात्रा के काव्यमय अनुभव -

शहर की चौड़ी सड़कों से गांव की पगडंडियों तक पहुंचे,
दौड़-धूप के जीवन से शांत वातावरण तक पहुंचे।
पक्के ऊंचे मकानों से कच्ची झोपड़ियों तक पहुंचे,
छल-छद्म से दूर शान्त परिवेश में पहुँचे।

कहलाते हम समृद्ध हैं पर और पाने की चाहत है,
जो दिखते अभावग्रस्त उनमें देने की ताकत है।
नजरों में स्वागत बोली में प्रेम होठों पर मुस्कान है,
प्रकृति माता से पोषित वे हमारे अन्नदाता है।

उनके लिए कुछ करने की चाहत हममें जागी है,
खेत हरे भरे हो जाए ऐसी हमने ठानी है।
नदी किनारे बसने वाले सीधे सादे भोले भाले,
देश की सेवा करनी हो तो आओ हम इन्हें संभाले।

शहरवासी गर वनवासी की ताकत बन जाए,
कभी ना आना पड़े इन्हें गांव छोड़ शहर की ओर।
गांव शहर से जुड़ जाए कोई ना अंतर रह जाये,
ईश्वर से है प्रार्थना हमारी, हर विपदा से इन्हें बचाये।

अमृत वचन

वास्तविक शिक्षक वह है जो एक बच्चे को आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे न कि उसके दिमाग को सिर्फ किताबी ज्ञान से भरे।

- डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

युवा समिति द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव का कार्यक्रम

- मोहित चौधरी, कार्यकर्ता युवा समिति

माँ भारती रहे स्वतंत्र ये हर युवा का अरमान है।
देश के वीरों को करते हम बारम्बार प्रणाम हैं।।
भारत देश रच रहा उन्नति के नित-नए आयाम है।
आज़ादी के लिए जन-जन ने किये संघर्ष अविराम हैं।।

हम सब जानते हैं कि आजादी का अमृत महोत्सव आजादी का त्यौहार मनाने का एक अलग तरीका है। अमृत महोत्सव के जरिए देश की जनता को भारत की ताकत और सैन्य बल के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी मिली। इस साल आजादी के अमृत महोत्सव की तैयारी बड़े धूमधाम से सभी क्षेत्रों में की जा रही है। इस कड़ी को और भी मज़बूत करते हुए पूर्वांचल कल्याण आश्रम की युवा समिति ने आज़ादी के अमृत महोत्सव पर 15 अगस्त को प्रश्नोत्तरी और देशभक्ति गीतों से समृद्ध अंत्याक्षरी का आयोजन किया। इस आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि युवा समिति के सभी सदस्य कल्याण-भवन मे उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग भी लिया।

क्षेत्रीय युवा प्रमुख पीयूष अग्रवाल ने कार्यक्रम की रूपरेखा का विस्तृत विवरण दिया। कुल 5 टीमों ने भाग लिया। मोहित चौधरी ने अंत्याक्षरी करवाई एवं पीयूष अग्रवाल ने प्रश्नोत्तरी का संचालन किया। अंत्याक्षरी और क्विज दोनों मिलाकर टीम A विजयी बनी। युवा समिति का ई-विद्या कार्यक्रम सुदूर वनों में रह रहे वनवासी छात्र-छात्राओं में बहुत ही लोकप्रिय है।

अमृत महोत्सव मना सभी हम
मन को अपने करें तिरंगा,
उत्तर से लेकर दक्षिण तक
देशप्रेम की लहरे गंगा। ■

आगामी कार्यक्रम

हमारा नैपुण्य शिविर आगामी 12-13 नवम्बर को देवघर में आयोजित है। शुक्रवार 11 नवम्बर रात्रि को उपलब्ध रेलगाड़ी से जसीडीह जाना एवं वहाँ से वाहनों द्वारा 10 किलोमीटर दूर देवघर में शिविर स्थान तक सभी कार्यकर्ता पहुँचेंगे। शनिवार 12 नवम्बर को सुबह बाबाधाम तथा बासुकीनाथ दर्शन की व्यवस्था रहेगी। इसके पश्चात् सांयकाल से अपना नैपुण्य शिविर प्रारंभ हो जायेगा एवं 13 नवंबर रविवार रात्रि तक चलेगा। यह शिविर देवघर की सतनाली धर्मशाला में संपन्न होगा। अलीपुर महिला समिति की संयोजिका श्रीमती अमिता जी बंका के पिता जी द्वारा स्थापित यह दिव्य व भव्य भवन हमारे नैपुण्य शिविर का साक्षी बनेगा। पुरूषों एवं महिलाओं की रहने की व्यवस्था अलग अलग रहेगी। ■

सिंधारा उत्सव

- अमिता बंका, संयोजिका, अलीपुर समिति

बादलों का देख वेग, नदियाँ बहे हैं तेज़,
धरती ने फूलों से, देखो सजाई सेज।
मस्ती में धरती आज, मस्त हुआ ये गगन,
धरा लगे प्यारी, आकाश लगे प्यारा।
सावन में सखियों का संग लगे प्यारा।

सावन सुनते ही चित्त में हरियाली छा जाती है। मन हरा-भरा हो जाता है। मेंहदी से हथेलियां सजने लगती हैं। डालियों पर उमंग के झूले पड.जाते हैं। सावन का महीना स्वयं में एक विशेषता लिए हुए है, यह प्रकृति को तो सराबोर करता ही है साथ ही मन को भी भिगो देता है। विधाता की सबसे सुंदर रचना नारियों के लिए तो यह मौसम तरह – तरह की कल्पनाएँ लेकर आता है। कभी सखियों के साथ झूला झूलना और कभी शिव – पार्वती की उपासना में मन को रमाना और कभी मायके से सिंधारा की प्रतीक्षा करना।

समय के बदलते स्वरूप ने सिंधारा मनाने के स्वरूप को अत्यंत मनमोहक बना दिया है। बहनों का साज – श्रृंगार और नृत्य के साथ मन का मन से मिलन, सिंधारा की बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी है। इसी परिप्रेक्ष्य में पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता हावड़ा महानगर अपनी भगिनी कार्यकर्त्ताओं के मन को उल्लास से भरने के लिए सिंधारे का आयोजन करता है। कोलकाता महानगर की बहनों ने दिनांक 3 अगस्त को हल्दीराम बैंक्वेट में सिंधारा उत्सव का आयोजन किया। समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। बहनों नें मंगलाचरण में ईश वंदना की।

कोलकाता महानगर की 19 महिला समितियों की लगभग 200 बहनों ने सावन के इस उत्सव में भाग लिया। पूरा सभा मंडप राजस्थान के रंग-बिरंगे परिधानों से सजा था। इस आयोजन में महिला समितियों की ओर से रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। हास-परिहास, नृत्य-गान के साथ-साथ क्विज और हाउजी का भी आयोजन था। आकर्षक वेश-भूषा से सुसज्जित बहनों को सम्मानित भी किया गया। बढ़ती आयु की सीमाओं को लाँघते हुए मंच पर की गई नृत्य की प्रस्तुति अवर्णनीय है । मंच और झूले की सज्जा ने उत्सव की सुंदरता में चार-चाँद लगा दिया। विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। सभी बहनों का साज-श्रृंगार और उत्साह अवर्णनीय था। इस बार सिंधारा का आयोजन करने का दायित्व अलीपुर समिति और बालीगंज समिति पर था। आयोजन में दोनों समितियों का संयोजन बहुत ही प्रशंसनीय रहा।

आयोजन में जलपान के साथ - साथ रात्रि भोज की भी व्यवस्था थी। अगले सिंधारा में मिलने की आशा से सभी ने विदा ली। ■

रक्षाबंधन महोत्सव 2022

- निर्मला केजरीवाल, मंत्री, महानगर महिला समिति

पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर की बहनों ने मन बनाया कि देश की सीमा की सुरक्षा में डटे रहने वाले फौज के भाई – बहनों की कलाइयों को रक्षाबंधन के इस अटूट सूत्र से सजाया जाए और उनके द्वारा किए जा रहे देश-सेवा के कार्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाए।

तो इस कल्पना को साकार करने हेतु पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता की अलीपुर समिति की बहनों ने दिनांक 10.8.22 को कमाण्ड अस्पताल अलीपुर में भारतीय फौज के अस्वस्थ भाइयों के साथ रक्षाबंधन उत्सव मनाया।

ई एन टी वार्ड के अस्वस्थ भाइयों के लिए यह एक भावुक पल था। अलीपुर समिति की बहनों ने जब उनका तिलक कर कलाइयों पर राखी बांधी तो उपस्थित सभी फौजियों की आँखें हर्ष से नम हो गईं। मुँह मीठा कराने के लिए सभी को अमूल दूध और सेव भी वितरित किए गए। फौज के वर्दीधारी सैनिकों ने हर कदम पर सहायता की, जिससे यह कार्यक्रम स्मरणीय बन गया। इस कार्यक्रम को प्रसिद्ध हिंदी दैनिक प्रभात खबर ने अपने प्रकाशन में स्थान भी दिया।

इस उत्सव को और अधिक स्मरणीय बनाने हेतु पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता हावड़ा महानगर की बहनों ने दिनांक 12 अगस्त 2022 को सीमा सुरक्षा बल के सॉल्टलेक कम्पोजिट अस्पताल के सीमा सुरक्षाबल के अस्वस्थ भाइयों के साथ रक्षाबंधन उत्सव मनाया। पू.क.आश्रम की 18 समितियों से 15 बहनों ने सुरक्षा बल के 89 भाइयों के मस्तक पर तिलक लगाकर उनकी कलाइयों पर राखी बाँधकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया। बहनों ने सुरक्षा बल के द्वारा देश की सुरक्षा के लिए किए जा रहे योगदान और बलिदान के लिए अपना भी हरसंभव सहयोग देने के लिए संकल्प लिया। उत्सव के उपरांत सीमा सुरक्षा बल के सदस्यों के साथ समूह चित्र सत्र का भी आयोजन हुआ। पूर्वांचल कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय महिला टोली प्रमुख श्रीमती सीमा रस्तोगी जी ने अपनी अन्य सहयोगी बहनों के साथ कल्याण भवन जाकर वहाँ पर उपस्थित संगठन के अधिकारियों को रक्षा सूत्र बाँधकर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया।

कल्याण आश्रम की बहनों ने सीमा पर तैनात सैनिक भाइयों और वनवासी भाइयों के लिए राखी भेजकर उनके साथ खड़े रहने का संदेश दिया। ■

लेकटाउन समिति द्वारा त्रिदिवसीय राखी मेला का भव्य आयोजन

- शकुन्तला अग्रवाल, सह संगठन मंत्री, महानगर महिला समिति

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता हावड़ा महानगर राखी मेले का बड़े उत्साह के साथ आयोजन करता रहा है। किंतु विगत दो वर्षों से यह मेला कोरोना काल के कारण आयोजित न हो सका था। परिस्थितियों की अनुकूलता और कल्याण आश्रम की बहनों के उत्साह ने इस आयोजन को सफलता के शिखर पर पहुँचाया। त्रिदिवसीय राखी मेला का आयोजन गोकुल बैंक्वेट, लेक टाउन में किया गया। यह मेला 26 जुलाई से 28 तक रहा। इस कार्यक्रम के आयोजन तथा व्यवस्था का दायित्व पूर्वांचल कल्याण आश्रम की लेक टाऊन महिला समिति ने लिया था। इस बार 4/5 स्टॉल दूसरे शहरों - मुंबई, प्रयागराज, कानपुर, लखनऊ जैसे शहरों से भी लगे।

कल्याण आश्रम की बहनों ने अति उत्साह से भाग लिया। उल्लेखनीय है कि इस आयोजन से होने वाली लाभ राशि जनजाति भगिनी बन्धुओं के समग्र विकास हेतु व्यय होती है। ■

अनुकरणीय

- मोहनलाल गर्ग, मंत्री, हावड़ा महानगर

पांचजन्य-सा एक बार जागरण मन्त्र का गुंजन हो,
छन्द-छन्द की पंक्ति-पंक्ति में जीवन का स्पन्दन हो।
जन-मन को प्रेरित करे अनुकरणीय आचरण तुम्हारा,
नमन है, वंदन है राष्ट्र-सेवक और हितैषी तुम्हारा।

आज जब लोग सिर्फ दिखावे के नाम पर अपने बच्चों के शादी – विवाह में करोड़ों खर्च कर देते हैं.... ऐसे स्वार्थपूर्ण समाज के सामने उत्तर हावड़ा से पूर्वांचल कल्याण आश्रम के समर्पित कार्यकर्ता श्रीयुत मनोज अग्रवाल ने अपने सुपुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में कल्याण आश्रम को 1,00,000/- की धनराशि अनुदान हेतु भेंट की है। इसी कड़ी में मध्य हावड़ा से कार्यकर्ता श्रीमती रेखा जी अग्रवाल ने अपनी सुपुत्री के दाम्पत्य जीवन के शुभारंभ होने पर 11,000/- की धनराशि और रेखा जी के समधी जी दयाकिशन अग्रवाल जी ने भी 21,000/- का अनुदान दिया है। इसी क्रम में कल्याण आश्रम मध्य हावड़ा के वरिष्ठ अधिकारी स्व. श्री भैरोंदानजी बैंगानी के पौत्र के विवाहोत्सव पर उनके पुत्र श्री चंद्रकान्त जी बैंगानी ने 11,000/- की रशि प्रदान कर अपने वनवासी बंधुओं का स्मरण कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है कि कल्याण आश्रम के कार्य में भावनाओं का सर्वाधिक महत्व है। पारिवारिक मंगल उत्सव एवं आयोजन में वनवासी बंधु का स्मरण कार्यकर्ता को सहज ही हो जाता है। अपने बच्चों के साथ – साथ वनवासी बच्चों के मुखमंडल पर मुस्कान लाने का सतत प्रयास रहता है । ■

वार्षिकोत्सव - 19 जून 2022

वनवासी समाज को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक रहना होगा : राज्यपाल छत्तीसगढ

- संजय रस्तोगी, मंत्री दक्षिण बंग, पू.क.आ.

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम से सम्बद्ध पूर्वांचल कल्याण आश्रम की **कोलकाता-हावड़ा महानगर इकाई का 41वां वार्षिकोत्सव दिनांक 19.06.2022 को कलामंदिर** में संपन्न हुआ। सुदूर वनांचलों में रहने वाले हमारे वनवासी भाई-बहनों के सर्वांगीण विकास एवं संस्कृति संरक्षण का प्रयास "वनवासी कल्याण आश्रम" निरंतर कर रहा है। कल्याण आश्रम अपने विविध आयामों के माध्यम से पचास हजार से ज्यादा गाँवों में शिक्षा, चिकित्सा, संस्कार, स्वावलम्बन, समरसता एवं स्वदेश प्रेम की अलख जगा रहा है। छत्तीसगढ की महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। पद्मश्री से अलंकृत पश्चिम बंगाल की गुरुमाँ कमली सोरेन ने विशिष्ट अतिथि के रूप में आसन ग्रहण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग के सभापति डॉ. चुनाराम मुर्मू ने की।

वनवासी कल्याण आश्रम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री रामचन्द्र खराड़ी का पहली बार कोलकाता आगमन पर 50 से ज्यादा सुप्रसिद्ध सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन किया गया। कोलकाता महानगर के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र चौधरी, हावड़ा महानगर के अध्यक्ष श्री शंकरलाल जी हाकिम तथा महानगर महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला बागड़ी मंच पर उपस्थित थीं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री रामचन्द्र खराड़ी जी ने कहा कि देश की अस्मिता पर जब भी संकट आया है तब तब जनजाति समाज अपना बलिदान देने से कभी पीछे नहीं रहा है। उन्होंने भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया कि सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन 15 नवम्बर को जनजाति गौरव दिवस के रूप में घोषित किया। उन्होंने आगे कहा कि भारत के विकास का मार्ग जनजाति क्षेत्र से होकर जाता है। यदि भारत को विश्वगुरु बनाना है तो जनजाति समाज का विकास करना होगा। मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके ने अपने संबोधन में कहा कि आज जब समाज सेवा स्वार्थपरक बन चुकी है ऐसे में वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता सिर्फ समर्पण की भावना से जनजाति समाज के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होने नगरवासियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की कि वे जनजाति समाज के उत्थान के लिए आगे आ रहे हैं। उन्होंने जनजाति युवा वर्ग को विभाजनकारी शक्तियों से बचने का सुझाव दिया और कहा कि वनवासी सनातन धर्म के ही अंग हैं। उन्होंने स्वयं के वनवासी होने पर गर्व व्यक्त किया और वनवासी बंधुओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक रहने का सन्देश दिया। संवैधानिक पद पर रहकर भी जनजाति समाज की सेवा करना वह अपना परम कर्तव्य समझती हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर संस्कार भारती द्वारा "नमामि भारतवर्षम्" नृत्य-गीतिका की प्रस्तुति की गई। इस नृत्य-गीतिका के माध्यम से वैदिक भारत से लेकर आधुनिक भारत का चित्रण किया गया। सूत्रधार थे श्री ध्रुवजीत भट्टाचार्य, भाष्य-रचना और बंगला गीत – श्री अमिताभ मुखर्जी, हिन्दी गीत – श्री समाज कुमार बसु एवं नृत्य प्रस्तुति सिउड़ि श्रृंजन, नृत्यरिदम एवं गौड़ीय चारुकला भारती के कलाकारों द्वारा पेश किया गया। ■

जनजातीय समाज का गौरव थीं

रानी कमलापति

अतीत की आँख से भोपाल के आँचल में गिरे आँसू का नाम है-रानी कमलापति। न वह किसी बड़े साम्राज्य की साम्राज्ञी थीं, न ही किसी प्रसिद्ध राजवंश से उनका नाता था और न ही वे अपने समय की कोई विकट योद्धा थीं। भोपाल से बाहर इंदौर या ग्वालियर में भी उनका नाम किसी ने नहीं सुना होगा। किंतु भोपाल की स्मृतियों में तीन सौ वर्षों से वे आदरपूर्वक ठहरी हुई हैं। पति की मृत्यु के पश्चात केवल एक गृहिणी थी। उनकी अपनी एक छोटी सी रियासत थी। वे जनजातीय समाज से थीं और केवल तीन सौ वर्ष पहले इस क्षेत्र में गोंड जनजाति राजवंशों में सम्मिलित थीं, जैसे चंदेरी में रानी मणिमाला और जबलपुर में रानी दुर्गावती। गोण्ड साम्राज्य इतिहास में अपने शौर्य, पराक्रम एवं देश-धर्म-संस्कृति के प्रति समर्पित भावना के लिए जाना जाता है, उसी परम्परा का वहन करने वाली यह रानी हम सभी के लिए एक गौरव थी। रानी कमलापति अपने जीवन के अंतिम वर्षों में आकस्मिक उपस्थित हुए एक घटनाक्रम की त्रासद शिकार हैं। रानी कमलापति के समय दिल्ली-आगरा मुगलों के चंगुल में थे। अपने आपको महापराक्रामी मानने वाला औरंगजेब मर चुका था। रियासतों में छीना-झपटी और अफरातफरी का वातावरण था। भोपाल के पास गिन्नौरगढ़ की गोंड रियासत में पारिवारिक कलह और कब्जे की लालसा राज्य को इतिहास के एक विकट मोड़ पर ले आईं। 1723 में गिन्नौरगढ़ के शासक निजाम शाह की हत्या उनके ही एक रिश्तेदार ने कर दी।

कमलापति उनकी ही रानी थीं, जो अपनी सुरक्षा के लिए आज के भोपाल के बड़े तालाब पर बने कमलापार्क स्थित अपने महल में आ गई थीं। वे एक ऐसी रानी थीं जिसे पति की हत्या के प्रतिशोध के लिए कुछ करना ही था। दिल्ली से भागकर आया एक अफगान इसी मोड़ पर कहानी में दाखिल होता है, जो धन के बदले रानी का प्रतिशोध पूरा तो करता है लेकिन अकेली रानी के राज्य पर ही दांत गड़ाने का इरादा भी रखता है। उसकी कुदृष्टि के कारण उस पर विश्वास करना अब कठिन हो गया। कुएँ से बची रानी के सामने अब गहरी खाई है। वह जल्दी ही समझ गई कि 'दोस्त' के रूप में उन्होंने मौत को महल दिखा दिए हैं। रानी के सामने पहले जाने-पहचाने शत्रु कोई बाहर के नहीं अपितु अपने ही परिजन थे। क्या करें, क्या न करें, कुछ समझ में न आए ऐसी स्थिति हो गई। अब वे अनजान और बेरहम शत्रुओं से घिर जाती हैं। इस नए संघर्ष में उनका युवराज पुत्र नबल शाह मारा जाता है किसी धोखेबाज जाहिल के हरम का हिस्सा बनने की बजाए वे भोपाल के छोटे तालाब में अपने महल से उतर कर जलसमाधि का विकल्प चुनती हैं। बस यही वो क्षण हैं जब रानी स्वयं को हिन्दू संस्कृति के संस्कारों के अनुरूप भोपाल की स्मृतियों में अंकित कर लेती हैं, सदा के लिए।

जीवन मूल्य के लिए अपने आपको विलोपित कर देना कोई सामान्य बात नहीं है। इसलिए कहते हैं कि इतिहास का स्मरण करना वर्तमान के लिए पथ दर्शक हो जाता है। आज इसी रानी की स्मृति में भोपाल के पास एक रेलवे स्टेशन का नामकरण हुआ और वर्तमान पीढ़ी को गोण्ड राजवंश की रानी के बारे में जानने का अवसर मिला, ऐसा कह सकते हैं। ■

(बनबंधु पत्रिका से साभार)

युगवक्ता वरिष्ठ कवि
डॉ. कुमार विश्वास को
महानगरीय कार्यों की जानकारी दी

कोलकाता में लायंस क्लब ऑफ काकुडगाछी के सौजन्य से 26 अगस्त से 28 अगस्त तक युगवक्ता डॉ. कुमार विश्वास के श्रीमुख से **अपने अपने राम** का आयोजन कर महानगर में संस्कार निर्माण एवं राम भाव के जागरण का बहुत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य किया गया। डॉक्टर साहब की पीयूष वाणी ने श्रोताओं में नवीन ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार कर न **धर्मो धार्मिकेर्विना** की उक्ति को चरितार्थ किया। 27 अगस्त को कोलकाता महानगर के कुछ कार्यकर्ताओं ने मिलकर डॉक्टर साहब को कोलकाता हावड़ा महानगर में चल रहे वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों की जानकारी दी। वे कार्यकर्ताओं के समर्पण भाव एवं वनवासी सेवा कार्यों के प्रति लगन को देखकर बहुत प्रभावित हुए एवं वनवासी क्षेत्र में **अपने अपने राम** कार्यक्रम का आयोजन करने की मंशा जताई। कार्यकर्ताओं ने डॉक्टर साहब का "अंग वस्त्र" ओढ़ा कर एवं राम हनुमान की गले मिली छवि भेंट देकर अभिनंदन किया। इस अतीव महत्वपूर्ण आयोजन में संगठन से जुड़े प्राय: सभी कार्यकर्ताओं ने श्रीराम कथा का आनंद लेते हुए राम कार्य में अधिक समय और शक्ति नियोजित करने का संकल्प लिया।

अभिनन्दन

देश के सर्वोच्च पद पर वनवासी महिला विराजमान

वनवासी कल्याण आश्रम के प्रतिनिधि मंडल ने आदरणीय अध्यक्ष श्री रामचन्द्र खराड़ी जी के नेतृत्व में माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से भेंट कर उनका अभिनंदन किया

पूर्वांचल कल्याण आश्रम, बान्दवान छात्रावास के पूर्व छात्र श्री अनल कुमार किस्कू को सिद्धो कान्हो बिरसा विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक के साथ संस्कृत में स्नातकोत्तर (M.A.) की उपाधि प्राप्त करने पर कल्याण आश्रम परिवार की ओर से ढेर सारी बधाइयाँ और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ!

श्री किस्कू ग्राम दशीहिरा, जिला पुरुलिया के निवासी हैं।

बोधकथा

धरती का रस

एक राजा था। एक बार वह सैर करने के लिए अपने शहर से बाहर गया। लौटते समय वह किसान के खेत में विश्राम करने के लिए ठहर गया। किसान की बूढ़ी मां खेत में मौजूद थी। राजा को प्यास लगी तो उसने बुढ़िया से कहा 'माई, प्यास लगी है, थोड़ा सा पानी पिला दे।' बुढ़िया ने सोचा, चिलचिलाती धूप का समय है, इसे सादा पानी क्या पिलाऊंगी! यह सोचकर उसने अपने खेत में से एक गन्ना तोड़ा और उसे निचोड़ कर एक गिलास रस निकाल कर राजा के हाथ में दे दिया। राजा गन्ने का वह मीठा रस पीकर तृप्त हो गया। उसने बुढ़िया से पूछा, माई! राजा तुमसे इस खेत का लगान क्या लेता है? बुढ़िया बोली इस देश का राजा बड़ा दयालु है। लगान बहुत कम लेता है। राजा के मन में लोभ आया। उसने मन में तय किया कि शहर पहुँच कर गन्ने के खेतों का लगान बढ़ाना चाहिए। यह विचार करते-करते उसकी आँख लग गई। कुछ देर बाद वह उठा तो उसने बुढ़िया से फिर गन्ने का रस माँगा। बुढ़िया ने फिर गन्ना तोड़ा और उसे निचोड़ा लेकिन इस बार बहुम कम रस निकला। बुढ़िया ने दूसरा गन्ना तोड़ा। इस तरह चार-पाँच गन्नों को निचोड़ा, तब जाकर गिलास भरा। राजा ने यह देख कर बूढ़ी माँ से कहा...पहली बार तो एक गन्ने से ही पूरा गिलास भर गया था, इस बार वही गिलास भरने के लिए चार- पांच गन्ने तोड़ने पड़े, इसका क्या कारण है? किसान की माँ बोली.... धरती का रस तो तब सूखा करता है जब राजा के मन में लोभ आ जाता है। हमारे राजा तो प्रजा की भलाई करने वाले और न्यायप्रिय हैं। उनके राज्य में धरती का रस कैसे सूख सकता है! बुढ़िया का इतना कहना था कि राजा को चेत हो गया कि राजा का धर्म प्रजा का पोषण करना है, शोषण करना नहीं और उसने तत्काल लगान न बढ़ाने का निर्णय कर लिया। ■

कविता

भारत को उठाया है

- सुनीता जैन

संसार की नज़रों में, भारत को उठाया है।
इस देश के परचम का, सम्मान बढ़ाया है।।

हम राम के आराधक, महावीर के अनुयायी।
अपनी है अयोध्या ये, विश्वास दिलाया है।।

मुरली की धुन पर नाचें, हम गौ-माँ की संतानें।
तैंतीस कोटि देवों को , नित शीश झुकाया है।।

कमज़ोर नहीं हैं हम, दुश्मन को डराया है।
सीमा की सुरक्षा कर, आतंक भगाया है।।

हर खेत में है पानी, हर आँख में उम्मीदें।
इस देश की मिट्टी को, माँ कहके पुकारा है।।

तालीम-तवज़्ज़ो दे , बेटी को सँवारा है।
नारी की करें पूजा, इतिहास हमारा है।।

भक्ति से मिले शक्ति, पापों से मिले मुक्ति।
यह सत्य शिवम् सुंदर, सबने दोहराया है।।

पर्वत की गुफाओं में, अध्यात्म की ज्योति है।
सागर में छिपे मोती का राज बताया है।।

कल को किसने है देखा, कल को है किसने जाना।
हम आज में जीते हैं, यह आज हमारा है।।

■

41वें वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

रामचन्द्र की अध्यक्षता में, हर अनुसुइया विशिष्ट है।
सतयुग से कलयुग तक प्रभु की, अनुकम्पायें दृष्ट हैं।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com